

HINDI FILE



**DREAM**  
FOR NATION



**DARE**  
TO SERVE



**DELIVER**  
WITH INTEGRITY

# DAILY PRACTICE QUESTIONS

**BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM**

**DATE : SEPTEMBER 4, 2026**



Comprehensive  
Coverage



Exam-Focused  
Analysis



Concept Clarity  
& Insights



Practice MCQs  
with Explanation



Daily Updates,  
Better Results



**CONTACT INFO:**

+91 92896 33341 | +91 96679 33341



**EMAIL ID:**

info@sixsigmaias.com



**WEB PAGE:**

www.sixsigmaias.com



**ADDRESS:**

C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,  
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

## दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

**प्रश्न 1. उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में औपनिवेशिक भारत में राष्ट्रवादी राजनीति के उदय के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. शुरुआती राष्ट्रवादियों का मानना था कि ब्रिटेन में संवैधानिक आंदोलन और जनमत के माध्यम से अंततः भारतीयों के लिए राजनीतिक सुधार सुरक्षित किए जा सकते हैं।
2. इल्बर्ट बिल विवाद ने शिक्षित भारतीयों के बीच नस्लीय चेतना को मजबूत किया और भारत में ब्रिटिश उदारवाद की सीमाओं को उजागर कर दिया।

उपरोक्त कथनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

**विकल्प:**

- (a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, और कथन 2, कथन 1 की व्याख्या करता है
- (b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, लेकिन कथन 2, कथन 1 की व्याख्या नहीं करता है
- (c) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है
- (d) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है

**सही उत्तर: (b)**

**विस्तृत व्याख्या:**

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के शुरुआती नरमपंथियों ने राजनीतिक सुधार हासिल करने के लिए प्रार्थना पत्रों, प्रस्तावों और ब्रिटिश जनमत से अपीलें जैसे संवैधानिक और शांतिपूर्ण तरीकों को अपनाया। उनका मानना था कि ब्रिटिश उदारवादी मूल्य अंततः भारतीयों के लिए न्याय सुनिश्चित करेंगे।

इल्बर्ट बिल विवाद (1883) ने भारत में यूरोपीय लोगों के बीच गहरे नस्लीय पूर्वाग्रह को उजागर कर दिया, क्योंकि उन्होंने उस प्रस्ताव का कड़ा विरोध किया जिसके तहत भारतीय न्यायाधीशों को यूरोपीय अपराधियों की सुनवाई करने की अनुमति दी जा रही थी। इस घटना ने शिक्षित भारतीयों के बीच राजनीतिक जागरूकता बढ़ाई और ब्रिटिश उदारवाद के पाखंड को रेखांकित किया।

हालांकि, यह विवाद सीधे तौर पर यह स्पष्ट नहीं करता है कि नरमपंथियों ने शुरुआत में संवैधानिक तरीकों को क्यों अपनाया। इसलिए, भले ही दोनों कथन सही हैं, लेकिन कथन 2, कथन 1 की व्याख्या नहीं करता है।

**प्रश्न 2. भारत में जैव विविधता संरक्षण के संदर्भ में, "जैव विविधता हॉटस्पॉट" (biodiversity hotspots) की अवधारणा मुख्य रूप से किस पर आधारित है?**

**विकल्प:**

- (a) स्थानिक प्रजातियों (endemic species) की परवाह किए बिना सबसे अधिक वन आवरण वाले क्षेत्र
- (b) ऐसे क्षेत्र जिनमें उच्च स्थानिक प्रजातियों की प्रचुरता हो और जो महत्वपूर्ण आवास नुकसान का सामना कर रहे हों
- (c) विशेष रूप से रामसर कन्वेंशन दिशानिर्देशों के तहत पहचाने गए क्षेत्र
- (d) केवल लुप्तप्राय मेगाफौना (बड़े जीव-जंतुओं) की अधिकतम आबादी वाले क्षेत्र

**सही उत्तर: (b)**

**विस्तृत व्याख्या:**

एक जैव विविधता हॉटस्पॉट असाधारण रूप से उच्च जैव विविधता, विशेष रूप से स्थानिक प्रजातियों (ऐसी प्रजातियाँ जो केवल उसी क्षेत्र में पाई जाती हैं) वाला एक जैव-भौगोलिक क्षेत्र होता है, जो आवास विनाश के कारण गंभीर खतरे में है।

यह अवधारणा नॉर्मन मायर्स द्वारा पेश की गई थी। हॉटस्पॉट के रूप में अर्हता प्राप्त करने के लिए, एक क्षेत्र को दो मानदंडों को पूरा करना आवश्यक है:

1. इसमें स्थानिक पौधों की प्रजातियों की एक उच्च संख्या होनी चाहिए।
2. इसने अपने मूल आवास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा खो दिया हो।

केवल वन आवरण ही पर्याप्त नहीं है, रामसर कन्वेंशन विशेष रूप से आर्द्रभूमि (wetlands) पर लागू होता है, और हॉटस्पॉट का वर्गीकरण केवल बड़े लुप्तप्राय जानवरों (मेगाफौना) पर आधारित नहीं है।

**प्रश्न 3. उदारीकरण के बाद भारत के आर्थिक विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. जीडीपी (जीडीपी में सेवा क्षेत्र के योगदान में वृद्धि का अनिवार्य रूप से यह अर्थ है कि कृषि रोजगार में आनुपातिक गिरावट आई है।
2. अनुरूप रोजगार सृजन के बिना होने वाले आर्थिक विकास को अक्सर 'रोजगारहीन विकास' (jobless growth) कहा जाता है।
3. उच्च जीडीपी विकास की अवधि के दौरान भी श्रम का अनौपचारिकरण (informalisation) बढ़ सकता है।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

**विकल्प:**

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई भी नहीं

**सही उत्तर: (b)**

**विस्तृत व्याख्या:**

कथन 1 गलत है क्योंकि भारत में संरचनात्मक परिवर्तन असमान रहा है। यद्यपि जीडीपी में कृषि की हिस्सेदारी घटी है, फिर भी कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा कृषि में लगा हुआ है। इसलिए, जीडीपी संरचना में बदलाव से अनिवार्य रूप से आनुपातिक रोजगार बदलाव नहीं होते हैं।

कथन 2 सही है। रोजगारहीन विकास (jobless growth) उस स्थिति को संदर्भित करता है जहां रोजगार के पर्याप्त अवसरों के सृजन के बिना आर्थिक उत्पादन में वृद्धि होती है।

कथन 3 सही है। उच्च जीडीपी विकास के दौरान भी, कंपनियाँ लागत कम करने के लिए अनुबंध श्रम (contract labour), आउटसोर्सिंग और अनौपचारिक रोजगार पर अधिक निर्भर हो सकती हैं, जिससे अनौपचारिकरण बढ़ता है।

इस प्रकार, केवल कथन 2 और 3 सही हैं।

**प्रश्न 4. भारतीय लोकतंत्र और संवैधानिक शासन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. संविधान की प्रस्तावना में अनुच्छेद 368 के तहत संशोधन किया जा सकता है।
2. मौलिक अधिकार पूर्ण (absolute) हैं और उन पर उचित प्रतिबंध नहीं लगाए जा सकते।
3. राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत अदालतों द्वारा उसी तरह लागू करने योग्य हैं जैसे कि मौलिक अधिकार।
4. मूल संरचना (Basic Structure) का सिद्धांत संसद की संशोधन शक्ति को सीमित करता है।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

**विकल्प:**

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो

(c) केवल तीन

(d) सभी चार

**सही उत्तर: (b)**

**विस्तृत व्याख्या:**

कथन 1 सही है। केशवानंद भारती मामले (1973) में, सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि प्रस्तावना संविधान का एक हिस्सा है और अनुच्छेद 368 के तहत इसमें संशोधन किया जा सकता है, बशर्ते कि संशोधन से मूल संरचना में बदलाव न हो।

कथन 2 गलत है क्योंकि मौलिक अधिकार पूर्ण नहीं हैं। संविधान सार्वजनिक व्यवस्था, नैतिकता, सुरक्षा आदि के हित में कई अधिकारों पर उचित प्रतिबंध लगाने की अनुमति देता है।

कथन 3 गलत है क्योंकि राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत गैर-न्यायोचित (non-justiciable) हैं, जिसका अर्थ है कि अदालतें उन्हें सीधे लागू नहीं कर सकती हैं।

कथन 4 सही है। मूल संरचना का सिद्धांत यह सुनिश्चित करता है कि संसद संविधान में इस तरह से संशोधन नहीं कर सकती जो इसकी आवश्यक विशेषताओं को नष्ट कर दे।

इसलिए, केवल दो कथन सही हैं।

**प्रश्न 5. निम्नलिखित पर विचार कीजिए:**

**अभिकथन (A):** उष्णकटिबंधीय चक्रवात (Tropical cyclones) आमतौर पर भारतीय उपमहाद्वीप पर लैंडफॉल (जमीन से टकराने) के बाद कमजोर हो जाते हैं।

**कारण:**

1. उष्णकटिबंधीय चक्रवात अपनी अधिकांश ऊर्जा गर्म समुद्री जल के ऊपर संघनन (condensation) द्वारा निकलने वाली गुप्त ऊष्मा (latent heat) से प्राप्त करते हैं।
2. धरातलीय घर्षण (Surface friction) और भूमि पर निरंतर नमी की आपूर्ति का अभाव चक्रवाती प्रणालियों की तीव्रता को कम कर देता है।

निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

**विकल्प:**

(a) कारण 1 और कारण 2 दोनों सही हैं, और दोनों अभिकथन (A) की व्याख्या करते हैं

(b) कारण 1 सही है, लेकिन कारण 2 गलत है

(c) कारण 1 गलत है, लेकिन कारण 2 सही है

(d) कारण 1 और कारण 2 दोनों सही हैं, लेकिन केवल कारण 1 अभिकथन (A) की व्याख्या करता है

**सही उत्तर: (a)**

**विस्तृत व्याख्या:**

उष्णकटिबंधीय चक्रवात गर्म उष्णकटिबंधीय महासागरों के ऊपर तीव्र होते हैं क्योंकि गर्म समुद्र का पानी वाष्पीकरण का कारण बनता है, और जल वाष्प का संघनन गुप्त ऊष्मा ऊर्जा मुक्त करता है, जो चक्रवात को शक्ति देती है।

लैंडफॉल करने के बाद, चक्रवात का इस निरंतर नमी के स्रोत से संपर्क टूट जाता है। इसके अतिरिक्त, उबड़-खाबड़ ज़मीनी सतह घर्षण को बढ़ाती है, जिससे चक्रवात का परिसंचरण बाधित होता है और हवा की गति कम हो जाती है।

इस प्रकार, दोनों कारण सही हैं और मिलकर पूरी तरह से व्याख्या करते हैं कि लैंडफॉल के बाद उष्णकटिबंधीय चक्रवात क्यों कमजोर हो जाते हैं।

## दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

**प्रश्न 6.** हाल ही में चर्चा में रहे "पद्म डोरी" (Padma Doree) पहल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह कमल के रेशे (lotus fibre) के निष्कर्षण से जुड़े पारंपरिक हथकरघा आधारित सांस्कृतिक उत्पादों के पुनरुद्धार और प्रचार-प्रसार से जुड़ा है।
2. इसे कपड़ा मंत्रालय (Ministry of Textiles) के तहत महिला नेतृत्व वाले स्वयं सहायता समूहों को निर्यात-उन्मुख हस्तशिल्प समूहों में एकीकृत करने के उद्देश्य से शुरू किया गया है।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

**विकल्प:**

- (a) केवल एक
- (b) दोनों
- (c) कोई भी नहीं
- (d) केवल कथन 1 और कथन 2 आंशिक रूप से

**सही उत्तर: (a)**

**विस्तृत व्याख्या:**

कमल के रेशे पर आधारित उत्पादों और पारंपरिक शिल्प गतिविधियों से जुड़ी नवीन कपड़ा एवं शिल्प-संबंधित पहलों के संदर्भ में "पद्म डोरी" पर चर्चा की गई है।

कथन 1 सही है क्योंकि यह पहल कमल के रेशे के निष्कर्षण पर आधारित पारंपरिक उत्पादों के पुनरुद्धार और प्रचार-प्रसार से जुड़ी हुई है।

कथन 2 गलत है क्योंकि इसे औपचारिक रूप से कपड़ा मंत्रालय की केंद्रीय अधिसूचित योजना के रूप में शुरू नहीं किया गया था, जिसका उद्देश्य विशेष रूप से महिला नेतृत्व वाले स्वयं सहायता समूहों को निर्यात-उन्मुख हस्तशिल्प समूहों में एकीकृत करना हो।

इसलिए, केवल एक कथन सही है।

**प्रश्न 7. नागरिकता (संशोधन) नियम, 2026 के संदर्भ में, निम्नलिखित पर विचार कीजिए:**

ये नियम मुख्य रूप से पड़ोसी देशों के कुछ धार्मिक समुदायों से संबंधित प्रवासियों की निर्दिष्ट श्रेणियों को भारतीय नागरिकता प्रदान करने की प्रक्रिया को संचालित (operationalise) करते हैं।

निम्नलिखित में से कौन सा/से देश इन नियमों से जुड़े ढांचे के अंतर्गत शामिल है/हैं?

**विकल्प:**

- (a) केवल अफगानिस्तान, पाकिस्तान और बांग्लादेश
- (b) केवल अफगानिस्तान, म्यांमार और श्रीलंका
- (c) केवल पाकिस्तान, नेपाल और भूटान
- (d) केवल अफगानिस्तान, बांग्लादेश, म्यांमार और श्रीलंका

**सही उत्तर: (a)**

**विस्तृत व्याख्या:**

नागरिकता (संशोधन) ढांचा कुछ पड़ोसी देशों के निर्दिष्ट अल्पसंख्यक समुदायों पर लागू होता है।

ये देश निम्नलिखित हैं:

- अफगानिस्तान
- पाकिस्तान
- बांग्लादेश

इस अधिसूचित ढांचे में म्यांमार, श्रीलंका, नेपाल या भूटान शामिल नहीं हैं।

अतः विकल्प (a) सही है।

**प्रश्न 8. परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद (AERB) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. AERB अपने नियामक अधिकार को सीधे कार्यकारी अधिसूचना के माध्यम से परमाणु ऊर्जा अधिनियम, 1962 से प्राप्त करता है।
2. AERB के अध्यक्ष की नियुक्ति केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा की जाती है।
3. AERB भारत में परमाणु और विकिरण सुविधाओं में रेडियोलॉजिकल सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार है।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

**विकल्प:**

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो

- (c) सभी तीन  
(d) कोई भी नहीं

**सही उत्तर: (b)**

**विस्तृत व्याख्या:**

कथन 1 सही है। परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद का गठन भारत सरकार द्वारा परमाणु ऊर्जा अधिनियम, 1962 के तहत प्राप्त शक्तियों के तहत किया गया था।

कथन 2 गलत है। AERB के अध्यक्ष की नियुक्ति पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा नहीं की जाती है। यह बोर्ड परमाणु ऊर्जा विभाग (Department of Atomic Energy) के ढांचे के भीतर कार्य करता है।

कथन 3 सही है। AERB परमाणु और विकिरण सुविधाओं में परमाणु सुरक्षा, विकिरण संरक्षण और रेडियोलॉजिकल सुरक्षा मानकों को विनियमित करने के लिए जिम्मेदार है।

इसलिए, केवल दो कथन सही हैं।

**प्रश्न 9. उन्नत स्टील्थ फ्रिगेट "महेंद्रगिरी" (Advanced Stealth Frigate "Mahendragiri") के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. महेंद्रगिरी भारतीय नौसेना के प्रोजेक्ट 17A स्टील्थ फ्रिगेट का हिस्सा है।
2. इस पोत का निर्माण एकीकृत प्लेटफॉर्म प्रबंधन प्रणाली (integrated platform management systems) और उन्नत स्टील्थ सुविधाओं के साथ किया गया है।
3. प्रोजेक्ट 17A के फ्रिगेट विशेष रूप से मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (MDL), मुंबई में बनाए जा रहे हैं।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

**विकल्प:**

- (a) केवल एक  
(b) केवल दो  
(c) सभी तीन  
(d) कोई भी नहीं

**सही उत्तर: (b)**

**विस्तृत व्याख्या:**

कथन 1 सही है। आईएनएस महेंद्रगिरी (INS Mahendragiri) प्रोजेक्ट 17A स्टील्थ फ्रिगेट कार्यक्रम के तहत सातवां और अंतिम जहाज है।

कथन 2 सही है। इन फ्रिगेट्स में उन्नत स्टील्थ डिजाइन, एकीकृत प्लेटफॉर्म प्रबंधन प्रणाली और उन्नत युद्ध प्रणालियाँ शामिल हैं।

कथन 3 गलत है क्योंकि प्रोजेक्ट 17A के जहाजों का निर्माण निम्नलिखित स्थानों पर किया जा रहा है:

- मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (MDL), मुंबई
- गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स (GRSE), कोलकाता

अतः केवल दो कथन सही हैं।

**प्रश्न 10. कैनाइन डिस्टेम्पर वायरस (CDV) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. CDV वायरस के 'पैरामिक्सोविरिडे' (Paramyxoviridae) परिवार से संबंधित है।

2. यह बीमारी केवल पालतू कुत्तों को प्रभावित करती है और जंगली मांसाहारी जीवों पर इसका कोई ज्ञात प्रभाव नहीं है।
3. इसका संचरण मुख्य रूप से सीधे संपर्क और एरोसोल (हवा के कणों) के संपर्क में आने से होता है।
4. इस बीमारी के खिलाफ टीकाकरण प्रमुख निवारक उपायों में से एक है।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

**विकल्प:**

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) केवल तीन
- (d) सभी चार

**सही उत्तर: (c)**

**विस्तृत व्याख्या:**

कथन 1 सही है। कैनाइन डिस्टेम्पर वायरस पैरामिक्सोविरिडे परिवार से संबंधित है।

कथन 2 गलत है क्योंकि यह बीमारी कई जंगली मांसाहारी जीवों को प्रभावित करती है, जिनमें शामिल हैं:

- बाघ
- शेर
- तेंदुए
- लोमड़ी
- अन्य मांसाहारी स्तनधारी जीव

कथन 3 सही है। इसका संचरण एरोसोल बूंदों (साँस के कणों), श्वसन स्राव (respiratory secretions) और निकट के शारीरिक संपर्क के माध्यम से होता है।

कथन 4 सही है। टीकाकरण सबसे प्रभावी निवारक रणनीतियों में से एक है, विशेष रूप से पालतू कुत्तों के लिए।

इस प्रकार, तीन कथन सही हैं।

**प्रश्न 11. बरगी बांध (Bargi Dam) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:**

1. बरगी बांध नर्मदा नदी पर बनाया गया है।
2. यह मध्य प्रदेश में जबलपुर के पास स्थित है।
3. इस बांध से बनने वाले जलाशय को 'रानी अवंती बाई सागर' के नाम से जाना जाता है।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

**विकल्प:**

- (a) केवल एक
- (b) केवल दो
- (c) सभी तीन
- (d) कोई भी नहीं

**सही उत्तर: (c)**

**विस्तृत व्याख्या:**

बरगी बांध मध्य प्रदेश में नर्मदा नदी पर निर्मित एक महत्वपूर्ण बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजना है।

कथन 1 सही है क्योंकि यह बांध नर्मदा नदी पर बनाया गया है।

कथन 2 सही है क्योंकि यह मध्य प्रदेश के जबलपुर के पास स्थित है।

कथन 3 भी सही है क्योंकि बांध द्वारा बनाए गए जलाशय को आधिकारिक तौर पर 'रानी अवंती बाई सागर' के नाम से जाना जाता है।

इसलिए, सभी तीन कथन सही हैं।

## दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

सामान्य अध्ययन - प्रश्नपत्र I (GS Paper – I)

**प्रश्न 1.** "भारत में क्षेत्रीय सांस्कृतिक पहचान के विकास के लिए जिम्मेदार कारकों की चर्चा कीजिए। इन पहचानों ने राष्ट्रीय एकीकरण और क्षेत्रीय संप्रभुता/दावेदारी (regional assertion) दोनों में किस प्रकार योगदान दिया है?"

**मॉडल उत्तर:** भारत की सामाजिक संरचना अत्यधिक सांस्कृतिक बहुलता की विशेषता रखती है। क्षेत्रीय सांस्कृतिक पहचान ऐतिहासिक, भाषाई, भौगोलिक, जातीय और आर्थिक प्रक्रियाओं के माध्यम से विकसित हुई है। स्वतंत्रता के बाद के काल में लोकतंत्रीकरण, क्षेत्रीय राजनीतिक लामबंदी और समुदायों के बीच बढ़ती जागरूकता के कारण ये पहचानें और अधिक मजबूत हुई हैं।

क्षेत्रीय पहचान के विकास के पीछे एक प्रमुख कारक भाषाई विविधता है। स्वतंत्रता के बाद भाषा राजनीतिक लामबंदी का एक शक्तिशाली आधार बन गई। राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 ने संघीय ढांचे के भीतर भाषाई पहचान को संस्थागत रूप दिया। तमिलनाडु में तमिल पहचान, महाराष्ट्र में मराठी पहचान और असम में असमिया पहचान भाषा-आधारित क्षेत्रीय चेतना के प्रमुख उदाहरण हैं।

दूसरा, ऐतिहासिक अनुभवों ने क्षेत्रीय पहचान को आकार दिया। पंजाब, कश्मीर और उत्तर-पूर्व जैसे विशिष्ट राजनीतिक इतिहास वाले क्षेत्रों ने अद्वितीय सामाजिक-राजनीतिक आकांक्षाएं विकसित कीं। साम्राज्यों की ऐतिहासिक स्मृतियों, औपनिवेशिक अनुभवों और स्थानीय नायकों ने क्षेत्रीय गौरव को मजबूत किया।

तीसरा, भौगोलिक अलगाव ने भी इसमें योगदान दिया। उत्तर-पूर्व में पर्वतीय क्षेत्र, राजस्थान में मरुस्थलीय पारिस्थितिकी और केरल में तटीय संस्कृतियों ने विशिष्ट जीवन शैली और सांस्कृतिक प्रथाओं को जन्म दिया। विशेष रूप से जनजातीय समुदायों ने सापेक्षिक अलगाव के कारण अपनी अनूठी रीति-रिवाजों को बनाए रखा।

चौथा, क्षेत्रों के बीच आर्थिक असमानताओं ने क्षेत्रीयतावाद को तीव्र किया। केंद्र द्वारा कथित उपेक्षा ने अक्सर क्षेत्रीय राजनीतिक दावों को जन्म दिया। विकासात्मक असंतुलन के कारण विशेष श्रेणी का दर्जा या अलग राज्यों की मांग करने वाले आंदोलन उभरे।

चुनौतियों के बावजूद, क्षेत्रीय पहचानों ने राष्ट्रीय एकीकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारतीय संघवाद संवैधानिक तंत्र के माध्यम से विविधता को समाहित करता है। क्षेत्रीय भाषाएं, त्योहार, नृत्य रूप और व्यंजन भारतीय राष्ट्रवाद को कमजोर करने के बजाय उसे समृद्ध करते हैं। क्षेत्रीय दलों द्वारा लोकतांत्रिक भागीदारी ने राजनीतिक प्रतिनिधित्व को गहरा किया है।

इसके साथ ही, अत्यधिक क्षेत्रीयतावाद ने कभी-कभी अलगाववादी प्रवृत्तियों, अंतर-राज्यीय विवादों और पहचान के संघर्षों को भी जन्म दिया है। कुछ क्षेत्रों में स्वायत्तता की मांगों ने राष्ट्रीय एकीकरण और स्थानीय आकांक्षाओं के बीच तनाव को दर्शाया है।

हालांकि, भारत की ताकत संवैधानिक लोकतंत्र के भीतर विविधता में सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता में निहित है। क्षेत्रीय पहचानों को विभाजन के बजाय राष्ट्रीय एकता के उपकरणों में बदलने के लिए सहकारी संघवाद, सांस्कृतिक सम्मान और संतुलित विकास आवश्यक बने हुए हैं।

इस प्रकार, क्षेत्रीय पहचान स्वाभाविक रूप से राष्ट्र-विरोधी नहीं होती है; लोकतांत्रिक और संवैधानिक ढांचे के भीतर एकीकृत होने पर ये रचनात्मक बन जाती हैं।

#### सामान्य अध्ययन - प्रश्नपत्र II (GS Paper – II)

**प्रश्न 2. "भारतीय लोकतंत्र को मजबूत करने में विकेंद्रीकरण के महत्व का परीक्षण कीजिए। संवैधानिक समर्थन के बावजूद स्थानीय स्वशासन को संरचनात्मक चुनौतियों का सामना क्यों करना पड़ रहा है?"**

**मॉडल उत्तर:** विकेंद्रीकरण से तात्पर्य सरकार के उच्च स्तरों से स्थानीय संस्थानों को अधिकार, जिम्मेदारी और वित्तीय शक्तियों के हस्तांतरण से है। भारत में, लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण को 73वें और 74वें संवैधानिक संशोधनों के माध्यम से संवैधानिक दर्जा मिला, जिसने पंचायती राज संस्थाओं (PRIs) और शहरी स्थानीय निकायों (ULBs) को संस्थागत रूप दिया।

विकेंद्रीकरण का महत्व लोकतंत्र को गहरा करने की इसकी क्षमता में निहित है।

प्रथम, यह जमीनी स्तर (grassroots) पर भागीदारी को बढ़ावा देता है। स्थानीय नागरिक ग्राम सभाओं और नगरपालिका प्रक्रियाओं के माध्यम से शासन में सीधे भाग लेते हैं। इससे लोकतांत्रिक संस्कृति और जवाबदेही मजबूत होती है।

द्वितीय, विकेंद्रीकरण प्रशासनिक दक्षता में सुधार करता है। स्थानीय सरकारों को पानी की आपूर्ति, स्वच्छता, स्वास्थ्य और शिक्षा से जुड़ी स्थानीय आवश्यकताओं की बेहतर समझ होती है। इसलिए, नीतियां अधिक उत्तरदायी और संदर्भ-विशिष्ट बनती हैं।

तृतीय, यह सामाजिक न्याय और समावेशन को बढ़ावा देता है। महिलाओं, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए संवैधानिक आरक्षण ने राजनीतिक भागीदारी का विस्तार किया है। पंचायतों में महिला नेतृत्व ने कई राज्यों में स्थानीय शासन को बदल दिया है।

चतुर्थ, विकेंद्रीकरण संघ या राज्य सरकारों में सत्ता केंद्रित करने के बजाय कई स्तरों पर शक्ति का वितरण करके संघवाद को मजबूत करता है।

संवैधानिक समर्थन के बावजूद, स्थानीय स्वशासी सरकारों को बड़ी संरचनात्मक बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है।

सबसे प्रमुख मुद्दा वित्तीय निर्भरता का है। कई पंचायतों और नगर पालिकाओं में पर्याप्त राजस्व उत्पन्न करने की क्षमता की कमी है और वे राज्य के हस्तांतरण पर बहुत अधिक निर्भर हैं। सीमित वित्तीय स्वायत्तता विकासात्मक गतिविधियों को प्रतिबंधित करती है।

दूसरा, अपर्याप्त प्रशासनिक हस्तांतरण है। कई राज्यों में स्थानीय संस्थाओं पर नौकरशाही का नियंत्रण हावी रहता है। ग्यारहवीं और बारहवीं अनुसूचियों में सूचीबद्ध कार्यों को अक्सर पूरी तरह से स्थानांतरित नहीं किया जाता है।

तीसरा, क्षमता की कमी शासन की गुणवत्ता को प्रभावित करती है। कई निर्वाचित प्रतिनिधियों में तकनीकी विशेषज्ञता, प्रशासनिक प्रशिक्षण और संस्थागत समर्थन की कमी होती है।

चौथा, राज्य सरकारों का राजनीतिक हस्तक्षेप स्थानीय स्वायत्तता को कमजोर करता है। राज्य सरकारें अक्सर स्थानीय निकायों को भंग कर देती हैं, चुनावों में देरी करती हैं, या धन और नियुक्तियों को नियंत्रित करती हैं।

कुछ क्षेत्रों में भ्रष्टाचार, संभ्रांत वर्ग का कब्ज़ा (elite capture) और कमजोर योजना तंत्र इसकी प्रभावशीलता को और कम कर देते हैं।

विकेंद्रीकरण को मजबूत करने के लिए, भारत को स्थानीय स्तर पर वास्तविक वित्तीय संघवाद, क्षमता निर्माण कार्यक्रम, डिजिटल पारदर्शिता और नियमित राज्य वित्त आयोग सुधारों की आवश्यकता है।

अंततः, विकेंद्रीकरण केवल एक प्रशासनिक व्यवस्था नहीं है बल्कि एक लोकतांत्रिक आवश्यकता है। सहभागी शासन, समावेशी विकास और संवैधानिक लोकतंत्र को साकार करने के लिए मजबूत स्थानीय सरकारें आवश्यक हैं।

**सामान्य अध्ययन - प्रश्नपत्र III (GS Paper – III)**

**प्रश्न 3. "भारत में औद्योगीकरण और पर्यावरण क्षरण के बीच संबंधों की चर्चा कीजिए। सतत औद्योगिक विकास प्राप्त करने के उपाय सुझाइए।"**

**मॉडल उत्तर:** औद्योगीकरण भारत में आर्थिक विकास के प्रमुख चालकों में से एक रहा है। यह रोजगार सृजन, बुनियादी ढांचे के विकास, तकनीकी प्रगति और निर्यात विस्तार में योगदान देता है। हालांकि, पारिस्थितिक सुरक्षा उपायों के बिना तेजी से औद्योगिक विकास ने पर्यावरण के क्षरण को भी तीव्र किया है।

इसका एक बड़ा परिणाम वायु प्रदूषण है। ताप विद्युत संयंत्र (Thermal power plants), सीमेंट उद्योग, रिफाइनरियां और रासायनिक उद्योग सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड और पार्टिकुलेट मैटर (PM) जैसे हानिकारक प्रदूषक छोड़ते हैं। दिल्ली-एनसीआर, गुजरात और महाराष्ट्र के औद्योगिक समूहों में अक्सर हवा की गुणवत्ता में गंभीर गिरावट देखी जाती है।

दूसरा, औद्योगीकरण जल प्रदूषण में योगदान देता है। बिना उपचार के छोड़े गए औद्योगिक अपशिष्ट (effluents) नदियों और भूजल को दूषित करते हैं। कपड़ा, चमड़ा, दवा और रासायनिक उद्योग जहरीले पदार्थ छोड़ते हैं जो जलीय पारिस्थितिकी तंत्र और सार्वजनिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।

तीसरा, उद्योग भूमि क्षरण और वनों की कटाई को तेज करते हैं। खनन गतिविधियों और औद्योगिक गलियारों के कारण अक्सर आवासों का विनाश, जैव विविधता का नुकसान और जनजातीय समुदायों का विस्थापन होता है।

चौथा, औद्योगीकरण कार्बन उत्सर्जन को बढ़ाता है, जिससे जलवायु परिवर्तन में योगदान मिलता है। भारत के विनिर्माण क्षेत्र में जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता एक बड़ी चिंता बनी हुई है।

साथ ही, औद्योगीकरण को रोका नहीं जा सकता क्योंकि यह आर्थिक परिवर्तन और रोजगार के लिए आवश्यक है। इसलिए, चुनौती सतत (सस्टेनेबल) औद्योगिक विकास हासिल करने की है।

एक महत्वपूर्ण उपाय स्वच्छ प्रौद्योगिकियों (clean technologies) को अपनाना है। उद्योगों को ऊर्जा-कुशल मशीनरी, नवीकरणीय ऊर्जा और कम कार्बन वाले उत्पादन प्रणालियों की ओर रुख करना चाहिए।

दूसरा, पर्यावरणीय नियमों का अधिक कड़ाई से कार्यान्वयन आवश्यक है। प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों को डिजिटल अनुपालन प्रणालियों और रीयल-टाइम उत्सर्जन ट्रैकिंग के माध्यम से निगरानी बढ़ानी चाहिए।

तीसरा, भारत को सर्कुलर इकोनॉमी (circular economy) मॉडल को बढ़ावा देना चाहिए, जिसमें रीसाइक्लिंग, कचरे को कम करने और संसाधन दक्षता पर जोर दिया गया हो।

चौथा, उद्योगों को परियोजना योजना में पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (EIA) और पारिस्थितिक बहाली को एकीकृत करना चाहिए।

पांचवां, ग्रीन फाइनेंसिंग (हरित वित्तपोषण) और कार्बन बाजारों को बढ़ावा देने से पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार औद्योगिक प्रथाओं को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

विकास और स्थिरता के बीच संतुलन बनाने के लिए जनभागीदारी और कॉर्पोरेट पर्यावरणीय जिम्मेदारी (CER) भी उतनी ही महत्वपूर्ण हैं।

भारत का विकासात्मक भविष्य आर्थिक विकास को पारिस्थितिक सुरक्षा के साथ जोड़ने पर निर्भर करता है। सतत औद्योगीकरण विकास में बाधा नहीं है; बल्कि, यह दीर्घकालिक आर्थिक लचीलापन, सार्वजनिक स्वास्थ्य सुरक्षा और अंतर-पीढ़ीगत समानता सुनिश्चित करता है।

#### सामान्य अध्ययन - प्रश्नपत्र IV (GS Paper – IV)

**प्रश्न 4. "नैतिक शासन (Ethical governance) के लिए प्रशासनिक दक्षता को करुणा और जवाबदेही के साथ संतुलित करने की आवश्यकता होती है। उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए।"**

**मॉडल उत्तर:** नैतिक शासन से तात्पर्य सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता, जवाबदेही, सहानुभूति और सार्वजनिक कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता से निर्देशित प्रशासन से है। एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में, शासन को केवल दक्षता से नहीं आंका जा सकता; इसे मानवीय गरिमा और न्याय को भी बनाए रखना चाहिए।

प्रशासनिक दक्षता आवश्यक है क्योंकि सरकारें बड़ी आबादी और जटिल विकासात्मक जिम्मेदारियों को संभालती हैं। कुशल शासन योजनाओं के समय पर कार्यान्वयन, बेहतर सार्वजनिक सेवा वितरण और संसाधनों का इष्टतम उपयोग सुनिश्चित करता है। हालांकि, करुणा के बिना केवल लक्ष्यों और प्रक्रियाओं पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित करने से असंवेदनशील शासन का निर्माण हो सकता है।

कल्याणकारी प्रशासन में करुणा विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। सिविल सेवक अक्सर गरीब, बुजुर्ग, प्रवासी और आपदा पीड़ितों जैसे कमजोर समूहों के साथ व्यवहार करते हैं। नैतिक शासन मानवीय पीड़ा के प्रति संवेदनशीलता की मांग करता है।

उदाहरण के लिए, कोविड-19 महामारी के दौरान, कई जिला प्रशासनों ने औपचारिक कर्तव्यों से परे जाकर भोजन वितरण, प्रवासी परिवहन और चिकित्सा सहायता की व्यवस्था की। इस तरह के कार्यों ने प्रशासनिक दक्षता के साथ जुड़े करुणामय शासन को दर्शाया।

इसी तरह, जवाबदेही यह सुनिश्चित करती है कि सार्वजनिक अधिकारी अपने निर्णयों के लिए उत्तरदायी बने रहें। आरटीआई (RTI), सोशल ऑडिट और ई-गवर्नेंस जैसे पारदर्शिता तंत्र मनमानेपन और भ्रष्टाचार को कम करते हैं। जवाबदेही संस्थानों में जनता का विश्वास मजबूत करती है।

इन आयामों को संतुलित करना अक्सर चुनौतीपूर्ण होता है। सख्त प्रक्रियात्मक पालन से तत्काल मानवीय सहायता में देरी हो सकती है, जबकि जवाबदेही के बिना अत्यधिक विवेकाधीन करुणा दुरुपयोग और पक्षपात को बढ़ावा दे सकती है।

एक अच्छा उदाहरण आपदा प्रबंधन का है। बाढ़ या भूकंप के दौरान, अधिकारियों को राहत वितरण में पारदर्शिता बनाए रखते हुए त्वरित और करुणामय कार्रवाई करनी चाहिए। नैतिक संवेदनशीलता के बिना कुशल समन्वय सीमांत समुदायों की उपेक्षा कर सकता है, जबकि अनियंत्रित भावनात्मक निर्णय प्रशासनिक अराजकता का कारण बन सकते हैं।

इसलिए नैतिक शासन के लिए निम्नलिखित की आवश्यकता होती है:

- निर्णय लेने में सत्यनिष्ठा,
- नागरिक-केंद्रित प्रशासन,
- पारदर्शिता,
- संवेदनशील समूहों के प्रति सहानुभूति,
- और कार्यान्वयन में निष्पक्षता।

सिविल सेवकों को केवल कठोर प्रक्रियाओं का पालन करने के बजाय संवैधानिक नैतिकता को बनाए रखना चाहिए। नैतिक प्रशासन को पोषित करने के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional intelligence), नैतिक प्रशिक्षण और सार्वजनिक जवाबदेही तंत्र महत्वपूर्ण हैं।

भारत में, डिजिटल गवर्नेंस, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (DBT) और सोशल ऑडिट जैसी पहलों ने दक्षता और जवाबदेही में सुधार किया है। फिर भी, नैतिक शासन अंततः सार्वजनिक अधिकारियों के मूल्यों और आचरण पर निर्भर करता है।

इस प्रकार, सच्चे शासन की उत्कृष्टता तब उभरती है जब दक्षता करुणा द्वारा निर्देशित हो और जवाबदेही द्वारा मर्यादित हो।

#### सामयिकी / करंट अफेयर्स (Current Affairs)

**प्रश्न 5.** "ऑपरेशन व्हाइट स्ट्राइक (Operation WHITE STRIKE) आधुनिक युद्ध की बदलती प्रकृति और रणनीतिक तैयारियों को दर्शाता है। भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा ढांचे में इसके महत्व की चर्चा कीजिए।"

**मॉडल उत्तर:** ऑपरेशन व्हाइट स्ट्राइक भारत के विकसित होते रक्षा और रणनीतिक तैयारी ढांचे में एक महत्वपूर्ण विकास के रूप में उभरा है। यह एकीकृत युद्ध क्षमताओं, तकनीकी श्रेष्ठता, त्वरित प्रतिक्रिया प्रणालियों और समन्वित राष्ट्रीय सुरक्षा अभियानों पर बढ़ते जोर को दर्शाता है।

आधुनिक युद्ध अब पारंपरिक युद्धक्षेत्र के जुड़ाव तक सीमित नहीं रह गया है। समकालीन संघर्षों में साइबर युद्ध, सटीक हमले (precision strikes), ड्रोन निगरानी, इलेक्ट्रॉनिक युद्ध, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और नेटवर्क-केंद्रित अभियान शामिल हैं। ऑपरेशन व्हाइट स्ट्राइक ऐसी बहुआयामी सुरक्षा चुनौतियों के लिए भारत की तैयारी का प्रतीक है।

इस ऑपरेशन का एक बड़ा महत्व सशस्त्र बलों के बीच 'संयुक्तता' (jointness) को बढ़ाने में है। आधुनिक सैन्य सफलता तेजी से सेना, नौसेना, वायु सेना, खुफिया एजेंसियों और साइबर-सुरक्षा बुनियादी ढांचे के बीच समन्वय पर निर्भर करती है। एकीकृत कमान संरचनाएं प्रशासनिक दक्षता और रणनीतिक लचीलेपन में सुधार करती हैं।

दूसरा, यह ऑपरेशन सटीक-आधारित युद्ध (precision-based warfare) पर भारत के फोकस को उजागर करता है। सटीक हमला करने की क्षमता संपार्श्विक क्षति (collateral damage) को न्यूनतम करती है जबकि शत्रुतापूर्ण लक्ष्यों को प्रभावी ढंग से बेअसर करना सुनिश्चित करती है। यह जनशक्ति-प्रधान युद्ध से प्रौद्योगिकी-संचालित युद्ध प्रणालियों की ओर संक्रमण को दर्शाता है।

तीसरा, ऑपरेशन व्हाइट स्ट्राइक राष्ट्रीय सुरक्षा में निवारण (deterrence) के महत्व को प्रदर्शित करता है। रणनीतिक सैन्य तैयारी विरोधियों के शत्रुतापूर्ण कार्यों को हतोत्साहित करती है और दक्षिण एशिया तथा हिंद-प्रशांत (Indo-Pacific) क्षेत्र में भारत की भू-राजनीतिक स्थिति को मजबूत करती है।

चौथा, यह ऑपरेशन 'आत्मनिर्भर भारत' पहल के तहत स्वदेशी रक्षा विनिर्माण की बढ़ती भूमिका को रेखांकित करता है। उन्नत रडार सिस्टम, ड्रोन, मिसाइल प्लेटफॉर्म, स्टील्थ तकनीक और संचार नेटवर्क तेजी से घरेलू स्तर पर विकसित किए जा रहे हैं।

यह ऑपरेशन आतंकवाद, सीमा पार घुसपैठ और साइबर हमलों जैसे हाइब्रिड खतरों के प्रति भारत की स्वीकार्यता को भी दर्शाता है। आधुनिक राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए पारंपरिक सैन्य तैयारी और गैर-पारंपरिक प्रतिक्रिया क्षमताओं दोनों की आवश्यकता होती है।

हालांकि, रणनीतिक तैयारियों के साथ-साथ कूटनीतिक जुड़ाव, खुफिया समन्वय और आर्थिक लचीलापन होना चाहिए। राष्ट्रीय सुरक्षा बहुआयामी है और यह केवल सैन्य ताकत पर निर्भर नहीं रह सकती।

भारत को रक्षा आधुनिकीकरण, साइबर-सुरक्षा बुनियादी ढांचे, एआई-सक्षम निगरानी प्रणालियों और एकीकृत थिएटर कमानों में निवेश जारी रखना चाहिए। इसके साथ ही, क्षेत्रीय स्थिरता बनाए रखने के लिए अंतर्राष्ट्रीय कानून का पालन और रणनीतिक संयम महत्वपूर्ण बना हुआ है।

इसलिए, ऑपरेशन व्हाइट स्ट्राइक केवल एक सैन्य अभ्यास से कहीं अधिक का प्रतिनिधित्व करता है; यह इक्कीसवीं सदी के खतरों से प्रभावी ढंग से निपटने में सक्षम तकनीकी रूप से उन्नत, एकीकृत और भविष्य-उन्मुख राष्ट्रीय सुरक्षा ढांचे की ओर भारत के संक्रमण का प्रतीक है।